PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL Vol 2, Issue 1

आधुनिक हिंदी साहित्य में मध्यमवर्गीय परिवार की मानसिकता एवं मानवीय मूल्यों का विघटन

- संयोगिता मौर्या

सार

आज के युग में आये दिन हो रहे बदलाव को देखकर मन यह सोचता है कि क्या सच में समाज बदल गया है, क्या अब कोई ऐसी घटना या कोई ऐसी बात सामने नहीं आएगी जिससे लोगो को परेशानियों का सामना करना पड़ेगा | गांव या शहर सभी जगह बदलाव देखने को मिलता: परिवार शिक्षित हो रहे है लड़कियों को भी शिक्षा का भरपूर फायदा हो रहा है और वह इसका लाभ भी उठा रही है लेकिन क्या इसके बावजूद हम अपनी सोच में बदलाव ला पायें है| आधुनिकता के आड़ में आज की पीढ़ी को यह पता ही नहीं चल पाता है कि उनके किस रवैये से उनके परिवार या समाज को हानि पहुचती है |आधुनिकता के दिखावे में मनुष्य किस हद तक अमानवीय हो जाता है और झूठी प्रतिष्ठा को दिखाने के लिए अपने परिवार और समाज को क्षति पहुचाते है |

प्रस्तुत लेख में हम मध्यमवर्गीय परिवार की मानसिकता एवं मानवीय मूल्यों के विघटन को आधुनिक युग की प्रमुख कहानियों जैसे "चीफ की दावत" (भीष्म सहनी), "कर्मनाशा की हर" (शिवप्रसादसिंह) , "भोलाराम का जीव" (हरिशंकर परसाई), "एक दिन का मेहमान" (निर्मल वर्मा), "सिक्का बदल गया (कृष्णा सोबती), "यह अंत नहीं" (ओमप्रकाश बाल्मीकि), "ठाकुर का कुआ" (प्रेमचन्द), " कुत्ते की पूछ" (यशपाल), "रोज" (अज्ञेय), के द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है |

अक्सर देखा जाता है कि जब कोई गरीब परिवार का सदस्य पढ़कर या मेहनत करके समाज में प्रतिष्ठा हासिल कर लेता है, तो वह सभी को अपने से कम समझने लगता है और वह सभी परिवार और समाज के सदस्यों की अवहेलना करने लगता है जाने अनजाने वह परिवार से दूर होने लगता है और समाज भी उसे अस्वीकार करने लगता है |

कहानीकार कहानी के माध्यम से समाज को आईना दिखाता है कि हमे अपने परिवार के प्रति अपने रवैये को बदलना चाहिए | इसी के माध्यम से वह समाज में उठ रहे समस्याओं एवं विचारों को हमारे सामने खडा करता है | किसी ने सत्य ही कहा है कि साहित्य समाज का दर्पण है वह दर्पण हमें दिखता है कि हमने पीछे कितनी गलतियां की है | आधुनिक हिंदी साहित्य में मानवीय पक्ष की भावनाओं जैसे झूठी प्रतिष्ठा , बदलती संस्कृति, स्त्रियों के प्रति समाज का दृष्टिकोणआदि को भली-भांति उकेरित किया गया है |

भीष्म सहनी द्वारा लिखित 'चीफ की दावत' में यही देखने को मिलता है की मध्यमवर्गीकरण परिवार अपने स्वार्थ झूठी प्रतिष्ठा के लिए अपनी बूढी माँ का कितना अवहेलना करता है लेकिन माँ फिर भी

अपने बेटे के किसी भी बात को दिल से नही लगती है इस दिखावे के चलते बच्चे किस हद तक अपने परिवार के सदस्यों का अनादर करते है उन्हें अपने काबिल नही समझते | पारिवारिक जीवन मूल्यों के विघटन के लिए जिम्मेदार व्यक्तिगत विकास की स्वार्थ निहित प्रवृत्तियों की आलोचना कहानीयो के माध्यम से कहानीकार समाज को बताते रहे है |

जीवन में बहुत सी ऐसी भी परिस्थितिया आती है जब हमें अपने परिवार के साथ होना चाहिए "चीफ की दावत" में आधुनिक संस्कृति दिखावे की संस्कृति है पर इस संस्कृति में माँ के लिए कोई स्थान नहीं है |इसीलिए दावत के समय माँ को कूड़े की तरह छिपाने की आवश्यकता महसूस होती है |

वही माँ जब चीफ के सामने पड़ जाती है तो वह माँ को how do you do कहते है और माँ अपने बेटे की प्रतिष्ठा के लिए अंग्रेजी न जानते हुए भी अंग्रेजी में जवाब देती है बेटा भूल जाता है कि माँ का त्याग ,उस त्याग को जो उसके लालन पालन में माँ अपना सब कुछ बेचकर बेटे को अच्छी शिक्षा देती है कि एक दिन जब बेटा पढ़कर अच्छे पद पर नौकरी करेगा तो माँ के सारे कष्ट दूर हो जायेगे लेकिन समाज की सच्चाई कुछ और ही देखने मिलती है कि जब बच्चे पढ़कर योग्य हो जाते है तो वही माता – पिता अपने बच्चे को अशिक्षित लगते है बच्चे उन्हें किसी कूड़े से कम नही समझते है माता – पिता को इस बदलते मानसिकताऔर सभ्यता से घुटन होने लगता है और वह बच्चो से अलग रहना ज्यादा पसंद करते है |

"चीफ की दावत कहानी के मध्यम से लेखक ने मध्यमवर्गीय व्यक्ति की मानसिकता को उजागर किया है साथ ही मानवीय मूल्यों उनके आदर सम्मान अब मात्र दिखावा बनकर रह गया है |

स्वतंत्रता के बाद भी ग्रामीण समाज में व्याप्त सामाजिक कुप्रथाए धार्मिक पाखंड भ्रष्टाचार स्त्री संबंधित दुर्भावनाओ तथा अमानवीय प्रवृतियो का मिला – जुला सोच कहानी "कर्मनाशा की हार " में देखने को मिलता है | धार्मिक ग्रंथो का सहारा लेकर समाज में स्त्री की सामाजिक , आर्थिक , नैतिक को निर्धारिक करने तथा उसके आधिकारो को तय करने की पुरुष वर्चस्ववादी प्रवृत्तियों उजागर होती है | प्रेमचन्द के बाद शिवप्रसादसिंह की कहानियो में पहली बार यथार्थ फलक पर ग्रामीण- जीवन को देखने समझने और अभिव्यक्त करने की चुनौती स्वीकार की गई है |सामाजिक , राजनितिक , आर्थिक एवं सांस्कृतिक अन्तर्विरोध को देखने को सही दृष्टी शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में मिलाती है |

उन्ही की एक कहानी कर्मनाशा की हर है जिसमे मनुष्य के संघर्स को उजागर करते है जो अपने सामाजिक और वैयक्तिक हक़ के लिए लड़ता है , हसता है , रोता है , बार – बार हर कर हर नही मानता है | और संघर्स के द्वारा अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रतिब्ध्य दिखाई देता है |

"कर्मनाशा की हार " की भूमिका में वे लिखते है –मनुष्य और उसकी जिन्दगी के प्रति मुझे मोह है , जो अपनी अस्तित्व को उभारने के लिए विविध क्षेत्रो में विरोधी शक्तियों से जूझ रहा है | अंध – विश्वास ,उपेक्षा, विवशता ,अतृप्ति , शोषण, राजनैतिक , शोषण के निचे पिसता हुआ भी, जो अपने सामाजिक व मनोवैज्ञानिक हक़ के लिए लड़ता है , हसता है रोता है बार –बार गिरकर भी जो अपने लक्ष्य से मुह नही मोड़ता , वह मनुष्य तमाम शारीरिक कमजोरियों और मानसिकता दुर्बलताओ के बावजूद महान है |

आज भी लोग पढ़े लिखे होने के बावजूद अंधविश्वासी होते है इसी अंधविश्वासके कारण अपने बच्चो को खुली आजादी नही दे पाते परिणाम यह होता है कि लोग अपनों से अलग होने लगते है एक दुसरे का सम्मान ख़त्म होने लगता है | आज भी जाति के नाम पर लोगो को विवाह सम्बंधित छुट नहीं दिया जाता है अपने जाति विरादरी में विवाह करना है इसी अंधविश्वास के कारण औरतो को शिक्षा से वंचित रखा गया है , लोग पढ़े लिखे होने के वावजूद भी अनुलोमविवाह के पक्ष में नही रहते है |

शिवप्रसाद सिंह "कर्मनाशा की हार " कहानी पात्र कुलदीप के माध्यम से हमारे ग्रामीण जीवन की इस कुंठाग्रस्त , कठोर कट्टरतावादी मानसिकता के खिलाफ विद्रोह का स्वर प्रकट करते है | सबसे प्रबल रूप में यह रुढियो को लेकर प्रकट हुआ है | तमाम आधुनिक आविष्कारो , प्रगतिशील जीवन मूल्यों के आगमन के बावजूद हमारे ग्रामीण जीवन पुरातन , पुरोहितवादी परम्पराओ की खोल को अपने उपर लादे हुए है | इससे समाज की प्रगति तो पिछड़ती ही है , साथ ही साथ व्यक्ति की भावनाए कंठित होकर उसके जीवन को नष्ट कर देती है |

"कर्मनाशा की हार " में मनुष्य के कर्म को नष्ट करके उसके उपर सामाजिक रुढियो और नियति का अभिशाप लदने वाली उस समूची प्रवृत्ति के विरोध को प्रस्तुत करने में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है |

शिवप्रसादसिंहकी कहानी कर्मनाशा की हार में हम देखते है कि किस तरह एक जाति की लड़की फूलमतिया से प्यार करने वाला कुलदीप ऊँची जाति का होने के कारण समाज उसे अपनाने नहीं देता है , जब वह कुलदीप के बच्चे की माँ बनने वाली होती है , तो वह समाज उसे कुलक्षनी , डायन कहकर उसे अपमानित करता है और आये बाढ़ के प्रकोप से बचने के लिए नर बलि देना चाहते है नर बलि किसका उस निम्न जाति फूलमतिया के बच्चे का |

माध्यमवर्गीय परिवार की सबसे बड़ी विडम्बना है कि वह अपने परिवार की खुसी कम देखता है समाज की खुसी का ख्याल उसे ज्यादा रहता है नईडीहका अंधविश्वासी समाज कर्मनाशा की बाढ़ को नैसर्गिक आपदा के रूप में नहीं देखता |विधवा लड़की फूलमति का कुलदीप से प्रेम और फलस्वरूप बच्चे के जन्म को पाप के रूप में देखते है

समाज की कुप्रथा को उजागर करने में लेखक पीछे नहीं रहता है | पात्रो के माध्यम से वह कहलवाता है |साथ ही समाज के कथित उच्चवर्ग को उसके चरित्र का यथार्थ बताने से भी नहीं झिझकते---

" मै आपके समाज को कर्मनाशा से नही समझता | किन्तु मै एक –एक के पाप गिनाने लागू तो यहाँ खड़े सारे लोगो को परिवार समेत कर्मनाशा के पेट में जाना पड़ेगा -------है कोई तैयार जाने को ?"

यदपि यह स्पष्ट है कि इसमे लोक जीवन की सहज उत्फुल्लता , रागात्मकता तथा आस्था प्रकट होती है | साथ ही निराशा की चोट , मोह भंग की वेदना और विफल इच्छाओ की छटपटाहट भी प्रकट होती है | यथार्थ का स्वर उभर कर कहानीकार एक और शोषित और पीड़ित कृषक समाज के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित कर रहे थे तो दूसरी ओर यथार्थ वादी दृष्टिकोण का परिचयभी दे रहे थे |

राजेन्द्र अवस्थी ने इसे इन शब्दों में सराहा है "कर्मनाशा की हार "(कहानी) मनुष्य के कर्म को नष्ट करके उसके ऊपर सामाजिक रुढियो और नियति का अभिशाप लादनेवाली उस समूची प्रवृत्ति के विरोध का प्रतीक है |"

वही दूसरी ओर "भोला राम का जीव "हरिशंकर परसाई द्वारा रचित व्यंग है जिसमे उन्होंने जीवन की उन सच्चाईयोंको उजागर किया है जो हमारे जीवन का हिस्सा है हर तरफ भ्रष्टाचार, से अमानवीय रूप पर मार्मिक चोट की है एक आम इंसान को जिंदगी में शासन तंत्र में फैले भ्रष्टाचार के कारण कितनी ही कठिनाईयो से गुजरना पड़ता है तथा इन सबसे लड़ने के बावजूद वह सफलता हासिल नही कर सकता है |

भोलाराम का जीव कहानी में व्यंग का मुख्य लक्ष्य सामाजिक और राजनितिक व्यवस्था पर है |आज हमें कुछ पाना है तो मेहनत ही काफी नहीं होता है |मेहनत के साथ ही हमें जान पहचान बहुत होनी चाहिए साथ ही उन्हें खुश करने के लिए कुछ उपहार स्वरुप भी देना आज का फैसन हो गया है |

आज जहाँ कही हम जाते है चाहे बिजली का बिल हो यो ट्रेन का टिकट हो हर जगह करप्शन है इसमे सीधे साधे आदमी की क्या हालत होती है यह भोलाराम की जीव के मध्यम से हरिशंकर परसाई ने व्यक्त किया है मानव की मानसिकता और उसका समाज पर पड़ता दुष्प्रभाव तो होता है ही साथ पारिवारिक विघटन भी देखने को मिलता है अब लोग परिवारका बोध नहीं उठा पते और अलग जाकर रहने लगते है भ्रष्टाचार का यह भी एक कारण है | वही निर्मल वर्मा की कहानी "एक दिन का मेहमान में स्त्री – पुरुष के संबंधो के अंतः सत्य को उद्घाटित किया गया है |

"नई कहानी " नाम का प्रचालन जनवरी १९५६ में हुआ था | लेकिन इससे पहले से ही कहानियाँ लिखी जानीशुरू हो गयी थी निर्मल वर्मा की कहानी "एक दिन का मेहमान " की संवेदना की युगीन यथार्थ के सन्दर्भ में ज्यादा आसानी से समझा गा सकता है | स्त्री – पुरुष संबंधो में आई दरार हमारे समय का सत्य है , यह सत्य निर्मल वर्मा की इस कहानी में सिर चढ़कर बोलता है |

समाज ने हमेशा औरतो को घर की चार दिवारी में बंद करके रखा है उसे घर बच्चो तक ही सीमित कर दिया बहार निकलकर काम करने के सारे रास्ते बंद कर दिया है | समय बदलता गया लोग धीरे –धीरे जागरूक होने लगे बड़े बुजूर्ग अपने घर की बहु बेटीयाँ पढ़ाने लगे जब लोग पढ़ लियेतो उन्हें यह समझ में आने लगा कि हमें अपने ज्ञान का उपयोग घर – परिवार की भलाई के लिए करना चाहिए साथ ही आर्थिक मदद के लिए कुछ कम करना चाहिए इस तरह से वह घर से बहार निकल कर काम करने लगी

कही न कही जब औरत अपनी पहचान बना लेती है तो वह मर्दों से भी आगे निकल जाति है घर बहार दोनों सभालते हुए वह अपनी पहचान बनती है

आजादी के पहले स्त्री अपने पारंपरिक अवगुंठन में सिमटी हुई दिखाई देती है जबकि आजादी के बाद नवीनचेतना के संपर्कमें आने के बाद बदले हुए परिदृश्य में स्त्री ने घर की दहलीज को लाघने का दुस्साहस किया | इस क्रांतिकारी बदलाव ने स्त्री को उसकी अस्मिता के प्रति जागरूक बनाने में भरपूर मदद की और आज वह पुरुष के वर्चस्व का चुनौती देती हुई अपने अधिकारों के प्रति सजग और सचेत पुरुष के

सामने तन कर खड़ा होने की स्थिति में आ चुकी है वह पुरुष के अन्याय का प्रतिकार करती है चाहे इसका परिणामकुछ भी हो |

स्त्री – पुरुष सम्बम्धो में अलगाव की प्रवृति इसी अस्मिता बोध के परिणाम स्वरुप उत्पन्नहुई है | जिसका हमारे युगीन यथार्थ से गहरा और प्रत्यक्ष सम्बम्ध है एक दिन का मेहमान में अकेलापन अलगाव कहानी को एक त्रासद अंत की ओर ले जा है | इस कहानी में महानगरीय जीवन की विसंगतियाँ और मध्यवर्गीय समाज में अहं के टकराव को रेखांकित किया यही कहानी की मूल सम्वेदना और कथ्य का अभिदित है |

निर्मल वर्मा आधुनिक मनुष्य की गहन आतंरिक समस्या को रेखांकित करने में विशेष रूचि लेते है |

“यह अंत नहीं “ – ओमप्रकाश बाल्मीकि द्वारा लिखा गया कहानी है यह कहानी एक दलित स्त्री की है जो अपने सम्मान के अधिकार के लिए जमीदारो से दुश्मनी मोल लेती है लेकिन फिर भी समाज हमेसा औरतो को ही दोषी मानता है ग्रामीण जीवन में दलित स्त्री पर अत्याचार की घटनाओ की संख्या को देखकर लगता नही कि हम किसी सभ्यसमाज में रह रहे है |

भारतीय आभिजात्यवादी सभ्यता संस्कृति और वर्णवर्चस्व की यह न ख़त्म होने वाली प्रवृति है | सोलह वर्षीय फूलनदेवी पर बेहमई के बीस ठाकुरों द्वारा लगातार कई दिनों तक बलात्कार किया गया था | उसे नग्न कर के सम्पूर्ण गांव के लोगो के समक्ष उसे कुएँ से पानी भरने पर मजबूर किया गया था | दलित स्त्री के स्त्रीत्व पर अत्याचार करके उसके अस्तित्व मिटा देने की बेहमई के ठाकुरो की जाति अहं और वर्चस्व की निरंकुशता , जातिवादी घृणा की पराकाष्ठ थी |

एक अबोध असहाय किशोरी , कामांध बर्बर पशुओ के आगे बेवस थी | लेकिन स्त्री के अस्तिस्व और अस्मिता को नकारने , उसे अपमानित करने के कारण जो आग फूलन में भड़की थी |वह बीस से बाईस वहशी ठाकुरों को गोलियों का निशाना बनाकर ही ठंडी हो पाई थी |

ऐसे बहुत से उदाहरण हमे देखने को मिलते है जो स्त्री के अस्तित्व और अस्मिताको अपमानित किया जाता है | आये दिन समाचारों और अखबारों के द्वारा पड़ने सुनने को मिलला है कि नाबालिक लड़की के साथ गैंग रेप हुआ हम पड़लिख लिए है लेकिन आज भी हम औरतो को हवस की नजर से देखते है क्या उन्हें जीने का अधिकार नहीं है क्या वे हमेशा इसी तरह हवस का शिकार बनती रहेगी कभी ट्रेन बस , खेत खलिहान घर , स्कूल दफ्तर कोई भी ऐसी जगह नहीं है जहाँ वह अपने को महफूज समझ सके |

क्या औरतो को फिर से शिक्षा से वंचित कर दिया जायेगा क्या उन्हें फिर घर तक सिमित रखा जायेगा क्या हमारे पास इसका कोई ठोस उपाय नही है सिर्फ कानून बनाने से औरतो पर अत्याचार बंद नही होगा |

स्वतंत्रता के बाद दलितों को मिली समानता , स्वतंत्रता और न्याय के अधिकारों का हनन बड़ी मात्रा में होता रहा है लेकिन पुलिस , विधायक और संस्थाए उत्पीडित को न्याय दिलाने में कोई सक्रिय भूमिका नही निबाहती | क्योंकि जातिवाद प्रवृतियो का प्रभाव इन पर भी उतना ही है |

"ठाकुर का कुआ " प्रेमचन्द द्वारा लिखी गयी है इस कहानी के माध्यम से भारतीय जाती प्रथा की सबसे घृणित परंपरा छुआछूत के कारण तिरस्कार , अपमान और मानवीय अधिकारों से वंचित जीवन जी रहे अछूतों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को अभिव्यक्त किया है अस्पृश्यता को कलंक मानते हुए गाँधी जी ने इसके निर्मूलन हेतु ऐसें कार्यक्रम चलाये जो हिन्दुओ के मन में अछूतो के प्रति मात्र करुणा, सहानुभूति जगाने वाले थे |

"कुत्ते की पूछ" के मध्यम से यशपाल जी ने मध्यम वर्गीय परिवार की मानसिकता व्यक्त किया है कि लोग कितना भी दया भाव प्यार अपनापन दिखाते है लेकिन कही न कही अपने पराये का भेदभाव भी रहता है |

कहानी मध्यम वर्गीय संकुचित दायरे और मध्यम वर्गीय नैतिकता की सच्चाई को भी रेखाकिंत तो कराती ही है , साथ ही सामन्तवादी और पूंजीवादी सोच के अमानवीय शोषण के तरीको का भी उजागर करती है | पत्नी की शिकायत पर कि पति कभी उनके साथ विचार – विनिमय या बहस नही करते तो सीधा सा जवाब मिलता है "जिस व्यक्ति से विचार की पूर्ण एकता हो , उससे बहस कैसी "? यशपाल छोटे –छोटे व्यंग्यात्मक वाक्यों द्वारा पति का पत्नी के बारे में जो रवैया है उसे स्पष्ट करते जाते है | रोग अज्ञेय द्वारा लिखा गया है यह एक एसी स्त्री की कहानी है जो अपने जीवन में हँसना , खेलना ,सुख ,दुःख को भूल चुकी है | विवाहित नारी के जीवन में आए बदलाव की कहानी है जो रोज की दिनचर्या से उबकर बुझ सी गयी है अब उसको कुछ भी नया नही लगता है |

"रोज" कहानी के मध्यम से अज्ञेय औरतो की मनोदसा दिखाने की कोशिश करते है कि किस तरह एक बदलाव से उसके जीवन की सारी खुशी समाप्त हो जाती है और वह घर के काम से ऊब जाती है अपने को बहुत असहाय सी महसूस करती है |

डॉक्टर और मालती की जीवन शैली लगातार एक ही ढर्रे पर चलती रहती है उस परिवेश के उबाऊपन से दोनों ही त्रस्त है | लेकिन आदमी बाहर जाकर अपने कामो में व्यस्त हो जाता है और औरत को वही काम करके वह अपने को दुनिया से कटा महसूसकरती है ,बाहर की दुनिया में क्या हो रहा है उसे कुछ पता ही नही चलता है इसी गंभीर समस्या को अज्ञेय ने रोज नामक कहानी में एक औरत को साधनों के अभाव में वह अपने मन को मारकर घर में ही रह जाती है |

प्रस्तुत कहानियों में नगरो - महानगरो में रहने वाले माध्यमवर्गीयों में पारिवारिक मूल्यों के प्रति बढती मानवीय मूल्यों का विघटन एवं पारस्परिक संघर्षो को दिखाया गया है | आज के युग में भी इन समस्याओं का अंत नहीं हो पाया है | इससे यह विदित होता है कि हर युग में यह समस्याए व्याप्त रहती है बस फर्क सिर्फ इतना होता है कि वह समय के साथ समस्या का रूप बदलता रहता है समस्या नहीं बदलती है वह वैसे का वैसा ही रहता है और मनुष्य इन समस्याओ से संघर्ष करता रहता है।

सन्दर्भ:

१."कर्मनाशा की हार " (संग्रह की भूमिका) शिवप्रसाद सिंह, पृ. 6
२.एक दुनिया समानान्तर – पृ . २२४
३.एक दुनिया समानान्तर – पृ.225
४. एक दुनिया समानान्तर – पृ . 228
५. आंचलिकता और आधुनिक परिवेश – डॉ .शिवप्रसाद सिंह , कल्पना , मार्च 1965
६. हिंदी कहानी आस्मित की तलाश पृ. 286
७. कहानी :नई कहानी , पृ . 15
८. दुसरे शब्दों में – निर्मल वर्मा
९. कुल जमा पचीस -पंकज बिष्ट
१०. एक दिन का मेहमान – निर्मल वर्मा
११. एक दिन का मेहमान, निर्मल वर्मा , पृ . 41
१२. शरद पाटिल – मक्स्वाद – फुले – आम्बेदाकरवाद पृ . 220
१३. मधु लिमये : डॉ . आम्बेडकर एक चिंतन , पृष्ट – 43
१४. मधु लिमये : डॉ . आम्बेडकर एक चिंतन पृ . 42
१५. बाबासाहेब डॉ . आम्बेडकर – सम्पूर्ण वाडमय, खंड – 16 पृष्ट 298
१६. बाबासाहेब डॉ . आम्बेडकर – सम्पूर्ण वाडमय, खंड – 16 पृ. 248
१७. समकालीन कहानी – दिशा और दृष्टि : सं. डॉ . धनंजय पृष्ट .4